Serving Education for Last 40 Years

NEERAJ®

MHI - 110

भारत में नगरीकरण–1 (प्रारंभ से c. 1300 तक)

(Urbanisation in India-1 from The Earliest Times to C. 1300)

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: *Sanjay Jain*

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com
Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 320/-

Content

भारत में नगरीकरण–1 (प्रारंभ से *c.* 1300 तक)

(Urbanisation in India-1 from The Earliest Times to C. 1300)

Sample Question Paper–1 (Solved) 1

Sample Question Paper–2 (Solved) 1

Sample Question Paper–3 (Solved) 1

Sample Question Paper–4 (Solved) 1

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

खण्ड 1 : नगरीय इतिहास : एक परिचय
(INTRODUCTION TO URBAN HISTORY)

1. नगरीकरण क्या है? 1
   (Understanding Urban History)
2. प्राचीन नगरों के अध्ययन संबंधी विभिन्न विचारधाराएँ 9
   (Approaches to the Study of Ancient Cities)

खण्ड 2 : उपमहाद्वीप के सर्वाधिक प्राचीन नगर
(THE EARLIEST CITIES IN THE SUBCONTINENT)

3. प्रारंभिक नगरवाद का परिचय 17
   (An Introduction to Early Urbanism)
4. हड़प्पा बस्तियों का विस्तार और संरचना 22
   (Distribution and Morphology of Harappan Settlements)
5. हड़प्पा की अर्थव्यवस्था और व्यवसाय 28
   (Harappan Economy and Occupations)
6. हड़प्पा के नगरीय समाज (Harappan Urban Societies) 34
7. एक प्रमुख नगरीय केंद्र का अध्ययन : मोहनजोदड़ो 41
   (Case Study of a Major Urban Centre: Mohenjodaro)

खण्ड 3 : प्रारंभिक ऐतिहासिक नगर : उत्तर भारत
(EARLY HISTORIC CITIES: NORTH INDIA)

8. उत्तर भारत में प्रारंभिक ऐतिहासिक नगरीय केंद्रों का पुरातत्व : अभ्युदय तथा विशेषताएँ 49
   (Archaeology of Early Historic Urban Centres in North India: Emergence and the Characteristics)
9. नगरीय केन्द्र तथा अन्य प्रकार के स्थल 58
   (Urban Centres and Other Types of Space)

10. समकालीन ग्रंथों में नगर (Cities in Texts) 64
11. तक्षशिला घाटी में प्रारम्भिक ऐतिहासिक नगर : पुरातात्विक परिप्रेक्ष्य 70
(Early Historic Cities in the Taxila Valley: Archaeological Perspectives)
12. पाटलिपुत्र : एक अध्ययन (Case Study: Pataliputra) 76
13. मथुरा : एक अध्ययन (Case Study: Mathura) 82

खण्ड 4 : प्रारंभिक ऐतिहासिक नगर : दक्कन तथा दक्षिण भारत (EARLY HISTORIC CITIES: DECCAN AND SOUTH INDIA)

14. प्राचीन नगरों के अभ्युदय का पुरातत्व और प्रारंभिक ऐतिहासिक नगरीय केंद्रों की विशेषताएँ : दक्कन तथा दक्षिण भारत 88
(Archaeology of the Emergence of Early Cities and the Characteristics of the Early Historic Urban Centres: Deccan and South India)
15. नागार्जुनकोंडा : एक अध्ययन 95
(Case Study: Nagarjunakonda)
16. अमरावती : एक अध्ययन (Case Study: Amravati) 102
17. कांचीपुरम तथा तोंडईमंडलम् : एक अध्ययन 107
(Case Study: Kanchipuram and Tondaimandalam)
18. विशेष अध्ययन : कावेरीपट्टनम/पुहार 117
(Case Study: Kaveripattanam/Puhar)

खण्ड 5 : प्रारंभिक मध्यकाल : भारत में नगरीकरण के पैटर्न (PATTERNS OF EARLY MEDIEVAL URBANISATION)

19. उत्तर-गुप्त काल में नगरीकरण : पुरातात्विक साक्ष्य 126
(Urbanisation in Post-Gupta Period: Archaeological Evidence)
20. पुरालेखों और ग्रंथों में प्रारंभिक मध्यकालीन नगरीकरण 132
(Early Medieval Urbanisation from Epigraphy and Texts)
21. कन्नौज (Kannauj) 138
22. प्रतिष्ठान : एक अध्ययन (Case Study: Pratishthan) 145
23. चंद्रकेतुगढ़ (Chandraketugarh) 151
24. शिशुपालगढ़ (Sisupalgarh) 157
25. विशेष अध्ययन : ब्राह्मणावाद/अल-मंसूरा 163
(Case Study: Brahmanabad/Al-Mansura)

■■

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

Sample

QUESTION PAPER - 1

(Solved)

भारत में नगरीकरण-1 (प्रारंभ से c. 1300 तक)

(Urbanisation in India-1 from The Earliest Times to C. 1300)

MHI-110

समय : 3 घण्टे] *[कुल अंक : 100*

नोट : *निम्नलिखित में से कोई पाँच प्रश्न करें। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।*

प्रश्न 1. हड़प्पा 'सभ्यता' में समय के साथ परिवर्तित परिस्थितियों का चित्रण कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-3, पृष्ठ-19, प्रश्न 4

प्रश्न 2. विभिन्न हड़प्पा बसावटों के घरों के पैटर्न की तुलना कीजिए तथा अंतर बताइये। लोथल और बनावली में घरों की मुख्य विशेषताएं क्या थीं?

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-4, पृष्ठ-26, प्रश्न 7

प्रश्न 3. उत्तर गुप्तकालीन नगरीकरण की मुख्य विशेषताएँ क्या हैं?

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-19, पृष्ठ-129, प्रश्न 4

प्रश्न 4. अधिशेष के सृजन में कौन-सी प्रक्रियायें शामिल हैं? नगर के अभ्युदय और संपोषण में इसकी भूमिका तथा महत्त्व की चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-1, पृष्ठ-3, प्रश्न 2

प्रश्न 5. नगरीय पतन के आर.एस. शर्मा के सिद्धान्त की विवेचना कीजिए। इस सिद्धांत के प्रति इतिहासकारों की प्रतिक्रिया क्या है?

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-20, पृष्ठ-134, प्रश्न 3

प्रश्न 6. क्या आप इस बात से सहमत हैं कि एक शहरी स्थान के रूप में मथुरा का अस्तित्व और महत्त्व कृष्ण के प्रभाव तक सीमित नहीं था? उदाहरणों के साथ अपने उत्तर की पुष्टि करें।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-13, पृष्ठ-85, प्रश्न 3

प्रश्न 7. मोहनजोदड़ो नगर की मुख्य विशेषताओं की चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-7, पृष्ठ-43, प्रश्न 2

प्रश्न 8. नगरवाद के प्रारम्भ से पूर्व की बसावट की इकाइयों का वर्णन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-9, पृष्ठ-60, प्रश्न 4

प्रश्न 9. 'क्षतिरक्षण पुरातत्व ने अतीत के बहुमूल्य सामग्री साक्ष्य को भावी पीढ़ी के लिए संरक्षित किया है' चर्चा डालिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-15, पृष्ठ-100, प्रश्न 6

प्रश्न 10. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए–

(क) उपयोग का नृवैज्ञानिक दृश्य

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-6, पृष्ठ-34, 'उपयोग का नृवैज्ञानिक परिदृश्य'

(ख) तक्षशिला घाटी के सर्वेक्षण

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-11, पृष्ठ-72, प्रश्न 2

(ग) तोंडईमंडलम्

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-17, पृष्ठ-111, प्रश्न 3

(घ) पैठण में उत्खनन

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-22, पृष्ठ-146, 'पैठण में उत्खनन'

■■

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

Sample

QUESTION PAPER - 2

(Solved)

भारत में नगरीकरण-1 (प्रारंभ से *c.* 1300 तक)

(Urbanisation in India-1 from The Earliest Times to C. 1300)

MHI-110

समय : 3 घण्टे] *[कुल अंक : 100*

नोट : *निम्नलिखित में से कोई पाँच प्रश्न करें। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।*

प्रश्न 1. दुर्ग टीले पर स्थित कुछ प्रमुख भवनों की चर्चा कीजिए। इन भवनों की प्रकृति के बारे में क्या बताया गया है?

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-7, पृष्ठ-44, प्रश्न 5

प्रश्न 2. शिशुपालगढ़ के दुर्गीकरण का क्या महत्त्व है?

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-24, पृष्ठ-160, प्रश्न 4

प्रश्न 3. अनेक इतिहासकारों ने लौह प्रौद्योगिकी के अभ्युदय तथा राज्य संरचनाओं और नगरों के अभ्युदय के बीच संबंध दर्शाया है? इस कारणात्मक संबंध के बारे में विस्तारपूर्वक बताइये।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-2, पृष्ठ-13, प्रश्न 6

प्रश्न 4. एक नगरीय केंद्र के रूप में उभरने में नागार्जुनकोंडा की सामाजिक भूमिका पर चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-15, पृष्ठ-98, प्रश्न 1

प्रश्न 5. चंद्रकेतुगढ़ की भौगोलिक स्थिति के महत्त्व का वर्णन करें।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-23, पृष्ठ-152, प्रश्न 1

प्रश्न 6. नगर 'शृंगारिक ग्रंथों' में आकांक्षाओं की संस्कृति के स्थल को निरुपित करता है। वर्णन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-10, पृष्ठ-66, प्रश्न 3

प्रश्न 7. ह्वेनसांग की कन्नौज यात्रा का संक्षेप में उल्लेख कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-21, पृष्ठ-140, प्रश्न 2

प्रश्न 8. साहित्यिक वृत्तांतों में पाटलिपुत्र का उल्लेख किस प्रकार मिलता है? उदाहरण दीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-12, पृष्ठ-79, प्रश्न 3

प्रश्न 9. आप 'नगर', 'नगरवाद' और 'नगरीकरण' से क्या समझते हैं? प्रारम्भिक नगरवाद की विशेषताओं की चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-3, पृष्ठ-18, प्रश्न 1

प्रश्न 10. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए–

(क) विनिमय और नेटवर्क : हड़प्पा

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-5, पृष्ठ-29, 'विनिमय और नेटवर्क'

(ख) पौराणिक देव समूह

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-13, पृष्ठ-83, 'पौराणिक देव समूह'

(ग) पूम्पुहार

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-18, पृष्ठ-119, प्रश्न 1

(घ) ब्राह्मणावाद और अल-मंसूरा

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-25, पृष्ठ-164, प्रश्न 1

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

भारत में नगरीकरण-1 (प्रारंभ से *c.* 1300 तक)
(Urbanisation in India-1 from The Earliest Times to C. 1300)

नगरीकरण क्या है?
(Understanding Urban History)

1

परिचय

नगर मानव की बसावट का एक महत्त्वपूर्ण स्वरूप है। नगरों के निर्माण प्रक्रिया ही नगरीकरण है। नगरों के निर्माण की प्रक्रिया लगभग पांच हजार वर्ष पहले इराक, मिस्र में शुरू हो गई थी। वर्तमान में अधिकांश लोग नगरों में रहते हैं, परंतु बीसवीं शताब्दी के आरंभ तक यह संख्या बहुत कम थी। उस समय लोग मुख्यतया वन-बस्तियों और कृषि उत्पादन वाले गाँवों में रहते थे। समय के साथ नगरों का उत्थान-पतन होता रहा, परंतु नगरों के अस्तित्व एक क्षेत्र अथवा दूसरे क्षेत्रों में लगातार बना रहा। नगरों का निर्माण एक मौलिक प्रक्रिया है। प्राचीन काल से अर्वाचीन काल तक मानवीय संकेन्द्रीकरण और उनके सामाजिक संबंधों के सबसे बड़े केन्द्र रहे हैं, जहाँ मानव अभिव्यक्ति के रूप में मंदिर, स्मारक, मकबरे और महल नगरीय कला और वास्तु के रूप में मिलते हैं। नागरिक विवाद के अनुभव के रूप में सार्वजनिक उत्सव, धार्मिक एवं सैनिक जुलूस और दार्शनिक वाद-विवाद भी मौजूद थे। नगरों का उद्‌भव जैविकीय घटना है। फलस्वरूप इससे कोई भी अलग नहीं होता। यहाँ नगर में पशुओं और मनुष्यों का समान महत्त्व होता है।

अध्याय का विहंगावलोकन

नगरीय केन्द्र क्या है?

नगरीय केन्द्र आवास एवं अन्य गतिविधियों का ऐसा केन्द्र है, जहाँ गाँवों की अपेक्षा आबादी घनी होती है। यहां के लोगों का संबंध खाद्य उत्पादन से नहीं होता, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक, औद्योगिक, वाणिज्यिक, धार्मिक, कलात्मक, सैनिक राजनीतिक एवं प्रशासनिक कार्यों से होता है। स्पष्ट है कि इनकी विशेषज्ञता अधिक होती है, अनुपूरक व्यवस्थाओं के लोग अधिक निकटता से जुड़े होते हैं, क्योंकि इससे लेन-देन अधिक प्रभावी होता है। संभवत: उनमें समन्वय की भावना भी अधिक होती है। नगरीय केन्द्र धनी और गरीब, शासक और शासित, खरीददार और विक्रेता, शिल्पकार और व्यापारियों के आवास होते हैं। प्रारंभ में कृषि समुदाय के निवास स्थान, सामाजिक संगठन और प्रौद्योगिक के क्षेत्र के घटनाक्रमों के फलस्वरूप सर्वप्रथम नगरीय केन्द्र का उदय हुआ। नगरीय केन्द्रों का अभ्युदय उस समय हुआ, जब शासक, शिल्प विशेषज्ञ, व्यापारी और समृद्ध लोगों का एक छोटे भौगोलिक क्षेत्र में प्रवेश हुआ, जो राजनीतिक रूप से संगठित थे।

अधिशेष क्या है?

प्रारंभ में प्रौद्योगिकी अधिक विकसित नहीं थी, फलस्वरूप कृषक अधिक मात्रा में खाद्यान्न उत्पन्न नहीं कर पाता था और उत्पादन का कुछ भाग किसी-न-किसी रूप में नगरों में चला जाता था। इस भाग को अधिशेष कहा जाता है। यह भाग भू-स्वामी के भेंट/शुल्क के रूप में या राजा को आरोपित कर के रूप में या नगर से शिल्पकारों और व्यापारियों द्वारा विनिमय के रूप में हो सकता था। अलग-अलग व्यवसायों के लोग पर्याप्त संख्या में नगर में रहते हैं। नगरीय निवासियों के मध्य संबंध प्राय: औपचारिक होते हैं। ये लोग अपनी दैनिक आवश्यकताओं का आर्थिक रूप से बड़ा भाग स्थानीय बाजारों से ही पूरा करते हैं।

नगर शक्ति का केन्द्र और नियंत्रण का स्थल है। ब्रॉडेल ने भी कहा है कि शहर प्रभुत्व के लिए सर्वोपरि होता है। नगर का उदय मानव के बीच संबंधों में परिवर्तन का प्रतीक है। जनजातियों से भिन्न राज्य राजाओं के केन्द्रीकरण पर आधारित है। स्थानीय नातेदारी नेटवर्क से रहित राजा और व्यापारी सुदूर भूमि के राजाओं, सामन्तों और शिल्पकारों के साथ विनिमय के नेटवर्क का सृजन करते हैं। विद्वानों का मानना है कि नगरों का उदय सामाजिक संगठन के क्षेत्र में रूपान्तरण से संबंधित था। वस्तुत: नगरों से रहित राज्य हो सकते हैं, लेकिन राज्य रहित कोई भी नगर नहीं था।

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

नगरों के संगठन के संबंध औपचारिक संपर्क होने से धीरे-धीरे औपचारिक लेन-देन में लिखित रिकार्ड महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने लगा। लिखित आदेश शक्तिशाली शासक या व्यक्ति के आदेशों को उन स्थानों तक ले जा सकते थे, जहाँ वे स्वयं उपस्थित नहीं होते थे। इसका प्रयोग व्यापारियों के बीच समझौतों, किसी राजा के अपनी प्रजा के लिए आदेशों को अग्रलिखित करने तथा धार्मिक उपदेशों को घोषित करने के लिए किया जा सकता था। इस प्रकार लेखन से कई संभावनाएं उजागर हो गईं और ज्ञान का भंडारण, स्थिरीकरण और प्रसार संभव हो पाया।

नगरीय इतिहास क्या है?

नगरीय इतिहास दो प्रक्रियाओं का अध्ययन करता है। प्रथम, ग्रामीण नगरीय क्षेत्रों में पलायन का और द्वितीय, ग्रामीण बस्ती का एक नए प्रकार की बसावट में परिवर्तन। नगरीय इतिहास न्यायिक-संस्थागत, जनसांख्यिकीय और सांस्कृतिक प्रक्रियाओं में परिवर्तन का अध्ययन है।

अन्तर्विषयक कल्पना के रूप में नगरवाद

नगरीय इतिहास को समझने के लिए विभिन्न विषयों के अध्ययन की जरूरत होती है, क्योंकि पिछली सदी के विषयों के ज्ञान क्षेत्र का विकास हो जाता है। इसका एक प्रसिद्ध उदाहरण दिल्ली नगर है, जहाँ पहले जलापूर्ति यमुना नदी से होती थी और आगे चलकर गंगा एवं व्यास नदियों से होने लगी, क्योंकि स्थानीय जनसंख्या में वृद्धि हुई है, जिसके लिए अधिक जल की आवश्यकता होती है। इस कार्य के लिए जल विभाजन, वनों और नदियों के जल प्रवाह को जानना होगा। इसकी अभियांत्रिकी, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र और राजनीतिक विज्ञान और समाजविज्ञान आदि का अध्ययन करना होगा, जिसमें अनेक महत्त्वपूर्ण स्रोतों की जरूरत पड़ेगी।

नगरवाद और तुलनात्मक पद्धति

नगरीकरण के अध्ययन में भी तुलनात्मक शोध पद्धति को अपनाया गया है, जिससे नगरवाद की विस्तृत जानकारी मिलती है। इसके लिए अनुभवजन्य आकड़ों का संग्रह विभिन्न दृष्टियों से किया जाता है। तुलनात्मक अध्ययन से नगरीय प्रक्रियाओं में निरंतरता तथा परिवर्तन का प्रेक्षण करने में मदद मिलती है। इसमें विभिन्न समाजों, राष्ट्रों और महाद्वीपों के लोगों से भोजन की आदतें, दैनिक कार्य, शयन प्रक्रिया, घरों की आकृति तथा वेशभूषा आदि को शामिल किया जा सकता है। तुलनात्मक पद्धति से विस्तृत भूमंडलीय और स्थानीय प्रक्रिया के मध्य पारस्परिक अन्तर्दृष्टि का ज्ञान भी होता है। नगरीय जीवन में अनेक समस्याएं भी होती हैं, जो न केवल संस्थागत संगठन अपितु जीवन की व्यावहारिकता के मुद्दों से भी संबद्ध हैं। तुलनात्मक पद्धति से यह भी पता चलता है कि भूमि, श्रम और पूँजी की प्रतिस्पर्धा भी नगरवाद में सम्मिलित है। नगर में निर्धनों, महिलाओं, धार्मिक समूहों और सामाजिक अल्पसंख्याओं की उपेक्षा की जाती है, वर्तमान में जिसकी ओर लोगों का ध्यान गया है।

नगरवाद का इतिहास लेखन

19वीं शताब्दी में नगरवाद का आधुनिक अध्ययन कला, मानविकी और समाज विज्ञान के मिश्रण से शुरू हुआ। हॉब्सबाम के अनुसार यह ऐसा लेखन है, जो वेराइटी स्टोर के समान है, जिसमें प्रस्तुत वस्तु शामिल हो सकती है। नगरीय इतिहास नगर को संपूर्णता के रूप में देखता है। नगर का भूदृश्य, काल्पनिक या वास्तविक, जो भी है इसके निवासियों द्वारा रचित है। इसमें सभी निवासियों की विशिष्ट भूमिका होती है। नगरवाद आम आदमी और उपेक्षित लोगों; जैसे– अस्पृश्यों, वेश्याओं और ट्रांसजेंडर का भी अध्ययन करता है।

नगरवाद संबंधी आधुनिक अध्ययन : हेनरी पिरेन और मैक्स वेबर

नगरवाद संबंधी आधुनिक अध्ययन का कारण औद्योगीकरण था, जिसमें अनेक नगर केन्द्रों की स्थापना हुई थी। वस्तुत: इसके कारण मानवजनित अनेक समस्याएं उत्पन्न हो गई थीं। हेनरी पिरेन ने बीसवीं शताब्दी के आरंभ में नगर क्रांति के विशिष्ट लक्षणों का पता लगाया। उनके अनुसार यूरोपीय नगरों का प्रादुर्भाव एशिया के साथ व्यापार मार्ग खुलने के कारण हुआ। सामन्तवाद का पतन नगरीय संगठन के नए रूपों के आने से हुआ। वेबर के अनुसार पूर्व आधुनिक विश्व में राजनीतिक सत्ता वाली संस्थाओं ने नगरीकरण का प्रतिनिधित्व किया, जिसमें नगरी समुदाय, नगरों में किलेबंदी बाजार, न्यायालय और शक्तिशाली पेशेवर समूह शामिल थे। पुनर्जागरण काल में नगरों में राजाओं और पुरोहितों की अपेक्षा व्यापारियों का नियंत्रण था। पूर्व आधुनिक नगरों के नैतिक मूल्य नातेदारी, राजत्व, परिवार और धर्म से शासित होते थे, जबकि आधुनिक नगरों में तर्कसंगत और साधक मूल्य अधिक महत्त्वपूर्ण है।

अमेरिका में नगरवाद का अध्ययन

अमेरिका में शिकागो स्कूल ने शिकागो नगर को प्रेक्षण का क्षेत्र बनाकर वैज्ञानिक मापन, परिमाणन और तुलना का विस्तृत अध्ययन किया। लुई विर्थ आदि विद्वानों ने नगरवाद का अध्ययन सामाजिक-मनोवैज्ञानिक और ऐतिहासिक-संरचनावाद के आधार पर किया। सांस्कृतिक पारिस्थितिकी की परम्परा ने नगरवाद को मानव पर्यावरण, प्रौद्योगिकी तथा सामाजिक संरचना की गतिशील अंतर्क्रिया के परिणाम के रूप में समझने का प्रयास किया। सुमेर, मिस्र या सिंधु घाटी जैसे नगरों के नगरवाद का अध्ययन जलवायु परिवर्तन के आधार पर किया गया। इस आधार पर हड़प्पा संस्कृति के पतन का कारण परिस्थितिकीय असंतुलन बताया गया। अत: वर्तमान में नगरों में पानी, बिजली और अपशिष्ट के निकास के लिए पर्याप्त क्षेत्र उपलब्ध कराए जा रहे हैं।

नगरवाद और आधुनिकता

नगरीकरण में आधुनिकता का विशेष ध्यान रखा गया है। यह आधुनिक नगर के भवनों में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। यहां भवनों का नियोजन पंक्तियों में सड़कों के किनारे किया जाता है, ताकि विनियमित मार्ग और मापित दूरियां हों। यूरोप के टाउनहाल

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

में भव्य घंटाघर बनाना समय अनुशासन की ओर इशारा करता है। बुद्धिजीवियों ने निर्मित स्थान पर ध्यान आकर्षित किया है। उन्होंने शहरों में अतिक्रमण, सुपर ब्लाकों के सृजन और बंजर भूमि के अभाव के मुद्दों की जाँच की है।

नगरीय इतिहास और सांस्कृतिक मनोवृत्ति

नगरीकरण सांस्कृतिक मनोवृत्ति से जुड़ा हुआ है। यह मनोवृत्ति नगरवाद के अनुभवजन्य पक्ष को जानने का एक प्रयास है। नगर को एक अपरिवर्तनीय स्थल के रूप में देखने की अपेक्षा इतिहासकारों ने वर्ग, प्रजाति, लिंग और लैंगिकता पर आधारित पहचानों के निर्माण की प्रक्रिया का अध्ययन किया। उन्होंने दर्शाया कि लोग नगरों में स्थानीय क्षेत्रों में रहते हैं, जो दैनिक प्रचलनों तथा व्यक्तिगत और अव्यक्तिगत नेटवर्क की श्रृंखला से उत्पन्न हुए। फेसबुक और ट्विटर की परस्पर क्रिया इस नेटवर्क का अंग है। 1970 के दशक के आरंभ से नगरीय स्थलों के निर्माण और प्रबंधन में पुरुष लिंग के इतिहास के प्रति लोग सचेत हुए। विचारकों ने कहा कि सार्वजनिक स्थलों और घरेलू स्थल के विषय में विचार पुरुष केन्द्रित विचारधारा से प्रभावित हैं। उदाहरणार्थ, बीसवीं सदी के पूर्वार्द्ध तक अधिकांश नगरों में महिलाओं के लिए सार्वजनिक शौचालय नाममात्र के थे, जबकि पुरुषों के लिए ये प्रत्येक जगह मिलते थे। नगरवादी इतिहासकारों ने नगर के निवासियों को अनुशासित तथा नियंत्रित करने के लिए साधनों के जुटाने की आवश्यकता की ओर भी ध्यान दिलाया।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. नगरीय केन्द्र के मुख्य लक्षणों के बारे में बताइए।

उत्तर–नगरीय केन्द्र की अवधारणा अपनी परिधि में अनेक रूपों को शामिल करने में सक्षम होती है। नगरीय केन्द्रों में ग्रामीण बस्तियों की अपेक्षा जनसंख्या अधिक होती है और जनसंख्या का घनत्व भी अधिक होता है। यहाँ सामाजिक विजातीयता ग्रामीण क्षेत्रों की अपेक्षा बहुत अधिक होती है।

नगरीय समुदाय के अधिकांश सदस्य खाद्य उत्पादन से प्रत्यक्ष रूप में जुड़े नहीं होते है। उनके कार्यकलापों में सामाजिक, सांस्कृतिक, औद्योगिक, वाणिज्यिक, धार्मिक, कलात्मक, शैक्षिक, सैनिक, राजनीतिक या प्रशासनिक कार्य शामिल होते हैं। विभिन्न प्रकार के कार्यकलापों के लिए अलग-अलग कौशल के लोगों की आवश्यकता होती है। फलस्वरूप इससे अधिक विशेषज्ञता भी आती है। शिल्पकारिता और व्यापार अलग-अलग हैं, परंतु गतिविधियां एक-दूसरे पर निर्भर होती हैं। ठीक इसी प्रकार प्रशासन और राजनीतिक नियंत्रण के कार्मिक पर गतिविधियां निर्भर हैं। अनुपूरक व्यवसायों के लोगों की प्रवृत्ति एक-दूसरे के निकट रहने की होती है, क्योंकि यह लेन-देन को अधिक प्रभावी बनाता है। स्थानिक दृष्टि से यदि इसे रूपान्तरित किया जाए, तो यह समूहन जनसंख्या के घनत्व को बढ़ाता है। आर्थिक, धार्मिक और राजनीतिक भूमिकाओं का निष्पादन करने वाले व्यक्तियों को उत्तरजीवी बने रहने के लिए एक-दूसरे की आवश्यकता होती है, किन्तु उनके संबंध नातेदारी से नहीं, अपितु परस्पर उपयोगिता से परिभाषित होते हैं।

विभिन्न कार्यकलापों का समन्वय करने वाली व्यक्ति और समूह की प्रवृत्ति शक्ति का केन्द्रीकरण करने की होती है। उदाहरणार्थ, राज्य विभिन्न हित समूहों की भिन्न-भिन्न और कभी-कभी परस्पर विरोधी मांगों के बीच सबसे बड़ा समन्वयकर्ता होता है। राजा, मंत्री, सेनापति और पुरोहित जो विजातीय समूह की आवश्यकताओं को सम्मिलित करते हैं और अपने हाथों से पर्याप्त शक्ति केन्द्रीकृत करने की क्षमता रखते हैं। इस प्रकार, समन्वय शक्तिशाली और शक्तिहीन वर्गों के उर्ध्व वर्गीकरण को जन्म देता है।

प्रत्येक नगरीय केन्द्र की विशेषता वहाँ विलासितापूर्ण जीवनयापन कर रहे शक्तिशाली समृद्ध और अप्रिय किन्तु आवश्यक कार्यों जैसे–शवदाह कर्म, सड़कों की सफाई और कुछ मामलों में मलमूत्र को साफ करने वाली निर्धन जातियों, अंत्यज्यों की उपस्थिति है।

नगरीय केन्द्र का प्राथमिक कार्य प्रशासनिक अनुष्ठानिक सेवा और व्यापार हैं। नगरीय केन्द्र धनी और गरीब, शासक और शासित, खरीददार और विक्रेता, शिल्पकार और व्यापारियों के निवास स्थान होते हैं।

सामाजिक संगठन और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हुए घटनाक्रमों के परिणामस्वरूप कुछ क्षेत्रों, जहाँ कृषि समुदाय के लोग रहते थे, सर्वप्रथम नगरीय केन्द्रों का उदय हुआ। नगरीय केन्द्रों का अभ्युदय सामाजिक रूप से स्तरीकृत और राजनीतिक रूप से संगठित कृषि समाजों में हुआ। उनके समुदाय में शिल्प विशेषज्ञ भी थे। बल प्रयोग पर एकाधिकार का दावा करने वाले लघु समूहों द्वारा राजनीतिक प्रभुत्व पर आधारित समाजों को राज्य समाज कहा जाता है। नगरीय केन्द्रों का अभ्युदय शासक, शिल्प विशेषज्ञ, व्यापारी और धनाढ्यों का एक छोटे से भौगोलिक क्षेत्र में अभिसरण के परिणामस्वरूप हुआ।

ब्राडेल नामक इतिहासकार का कहना है कि एक नगर की स्पष्ट विशेषता वह रीति है, जिससे वह यथासंभव सीमित क्षेत्र में अपने कार्यकलाप संकेन्द्रित करता है। अपने निवासियों को एक-दूसरे के बिल्कुल निकट संघनित कर देता है और उन्हें यातायात के लिए संकीर्ण व भीड़ भरी सड़कें देकर उन्हें ऊर्ध्वमुखी निर्माण के लिए बाध्य भी करता है।

प्रश्न 2. अधिशेष के सृजन में कौन-सी प्रक्रियायें शामिल हैं? नगर के अभ्युदय और संपोषण में इसकी भूमिका तथा महत्त्व की चर्चा कीजिए।

उत्तर–अधिशेष के सृजन में किसानों की उपज का कुछ भाग नगरों को चला जाता था, जो खाद्यान्न नगरों को जाता था, उसे अधिशेष कहा जाता है। यह उपज गाँव से नगरों में लाई जाती है। नगरीय केन्द्र गाँवों के खर्च निकासी के लिए अनेक प्रकार के संस्थागत तंत्रों का निर्माण करते हैं।

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

अधिशेष जुटाना एक नगरीय देवी से नाम पर भेंट शुल्क के रूप में हो सकता है, जिसे भू-स्वामिनी होने का विश्वास किया जाता होगा। अधिशेष राजा द्वारा आरोपित करों का स्वरूप धारण कर सकता है। अधिशेष नगर से शिल्पकारों और व्यापारियों द्वारा आपूर्ति की गई वस्तुओं के बदले में दिए गए विनिमय का रूप धारण कर सकता है।

कानूनों, परंपराओं और आस्था की प्रणालियाँ, जिनके पीछे सैन्य शक्ति होती थी, का प्रयोग कृषि उपज को नगरों में हस्तान्तरण करने के लिए किया जाता था। बड़ी संख्या में विभिन्न व्यवसायों के लोग नगरों में रहते हैं, इसके निवासियों के मध्य संबंध समान्यत: औपचारिक होते हैं। इस प्रकार की बसावटों के निवासी अपनी दैनिक आवश्यकताओं का आर्थिक रूप से बड़ा हिस्सा स्थानीय बाजारों से पूरा करते हैं।

नगर के अभ्युदय और संपोषण में अधिशेष महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। नगर का उदय मानव और प्रकृति के बीच संबंधों में परिवर्तन की अपेक्षा मानव के बीच संबंधों में इस परिवर्तन का प्रतीक है। नातेदारी आधारित समाज को सामान्यत: 'जनजातीय समाज' कहा जाता है। जनजातीय समाज इस सिद्धांत पर संगठित होते हैं कि समुदाय के सभी सदस्य एक-दूसरे से संबंधित होते हैं। उस क्षेत्र में उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों पर सामूहिक स्वामित्व होता है।

जनजातीय समाज ऐसी संरचना का निर्माण नहीं करते हैं, जहाँ सम्पदा या संसाधन कुछ परिवारों में केन्द्रीकृत होते हैं। राज्य समाजों में नातेदारी प्रणालियों का जाल इस प्रकार परिवर्तित किया जाता है कि यह कुछ परिवारों को सम्पत्ति एकत्र करने तथा मानव और प्राकृतिक संसाधनों के ऊपर विशेष नियंत्रण कार्यान्वित करने का अवसर प्रदान करता है।

जनजातियों से भिन्न राज्य राजाओं, पुरोहितों और व्यापारियों के हाथों में शक्ति और संपत्ति के केन्द्रीकरण पर आधारित है। स्थानीय नातेदारी नेटवर्क से उन्मुक्त राजा और व्यापारी सुदूर भूमि के राजाओं, सामन्तों और शिल्पकारों के साथ विनिमय के नेटवर्क का सृजन करते हैं।

राज्य समाजों के शक्तिशाली सदस्य विभिन्न शिल्प उत्पादों के इच्छुक रहते हैं, क्योंकि सुदूरवर्ती स्थानों की वस्तुएं उनके सम्मान और शक्ति को बढ़ाती हैं, इसलिए राज्य समाजों के शक्तिशाली सदस्य खाद्य और खनिजों को जुटाने के उद्देश्य से बसावटों के बीच बलपूर्वक संवाद सुनिश्चित करते हैं। राज्य समाजों के शक्तिशाली सदस्य उत्पादन या युद्ध के प्रयोजन के लिए जनसंख्या की गतिशीलता चाहते हैं।

प्रश्न 3. नगरीय इतिहास क्या है? हमें नगरीय इतिहास का अध्ययन अनेक विषयों के चश्मे से करने की आवश्यकता क्या होती है?

उत्तर–नगरीय इतिहास ग्रामीण से नगरीय क्षेत्रों में जनसंख्या के पलायन को इंगित करता है। नगरीकरण उस प्रक्रिया का उल्लेख करता है, जिसके द्वारा ग्रामीण जगत ने एक नए प्रकार की बसावट को जन्म दिया, जिसे नगर कहा गया। नगरीय इतिहास इन दोनों प्रक्रियाओं का अध्ययन है। पूर्ण रूप से नगरीय इतिहास का अध्ययन स्वत: ही न्यायिक-संस्थागत, जनसांख्यिकीय और सांस्कृतिक प्रक्रियाओं में परिवर्तन का अध्ययन बन जाता है। नगरीय इतिहास उस आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक और स्थानिक प्रणालियों की खोज है, जिसने बसावट के इस रूप को सृजित किया है।

नगरीय इतिहास का अध्ययन अनेक विषयों के चश्मे से करने की आवश्यकता होती है, क्योंकि नगरीय इतिहास के अध्ययन के लिए तुलनात्मक और अन्तर्विषयक अध्ययन पद्धति की आवश्यकता होती है। नगरीय इतिहास का अध्ययन करने के लिए अनेक विषय इसलिए आवश्यक हैं, क्योंकि पिछले सौ वर्षों में इस क्षेत्र का विकास विभिन्न विषयों से जानकारी ग्रहण करने के बाद हुआ है।

नगरीय अध्ययनों ने बार-बार विषयों की सीमाओं को तोड़ा है। इसको दिल्ली सरकार की जलापूर्ति व्यवस्था से समझा जा सकता है। प्रारंभ में जलापूर्ति केवल यमुना नदी से की जाती थी, परंतु जनसंख्या के बढ़ने से जलापूर्ति के लिए दूरवर्ती और व्यास नदियों से जल लिया जाने लगा। इसके लिए दिल्ली के ही अंदर विभिन्न क्षेत्रों में पानी के असमान बंटवारे का अध्ययन करना आवश्यक है। इस अध्ययन के लिए न केवल वनों, पर्वतों और नदियों से जलप्रवाह को समझने की आवश्यकता होगी, अपितु सत्ता के अधिक क्रम और अभियांत्रिकी के कौशल को भी जानना होगा। विभिन्न राज्यों तथा दिल्ली और अन्य क्षेत्रों के बीच तथा दिल्ली के निवासियों के बीच सत्ता और संपदा के वितरण पर ध्यान केन्द्रित करके अपनी समझ को बढ़ाया जा सकता है। इसके लिए अनुभवजन्य और सांस्कृतिक भूदृश्य के अध्ययन की भी जरूरत होगी। इस प्रकार के अध्ययन के लिए साहित्य, कला, फोटोग्राफी और फिल्म को समझना जरूरी है।

प्रश्न 4. नगरवाद के अध्ययन के लिए तुलनात्मक पद्धति के महत्त्व की चर्चा कीजिए ?

उत्तर–तुलनात्मक पद्धति से नगरवाद के विषय में सूक्ष्मतम ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। विभिन्न समय और स्थान की तुलना लोगों के ज्ञान की सीमा को व्यापक करती है तथा अतीत में गहन परिप्रेक्ष्य उपलब्ध कराती है। यह पद्धति अनुभवजन्य आंकड़ों के संग्रहण पर ध्यान केन्द्रित करने की ओर ले जाती है। यह सभी नगरों, जिनमें समान तत्त्व और विशिष्टताएं हैं, उन्हें एक-दूसरे से अलग करती हैं, जो उन्हें समझने के लिए महत्त्वपूर्ण हैं।

नगरवाद के लिए तुलनात्मक पद्धति का अध्ययन नगरीय प्रक्रियाओं में निरन्तरता तथा परिवर्तन का प्रेक्षण करने में हमारी मदद करता है। दीर्घकालावधि और विभिन्न स्थानों की तुलना में इतिहासकारों को दीर्घकालीन पैटर्न तथा परिवर्तन को समझने में सहायता करती है। तुलनात्मक पद्धति बृहत् भूमंडलीय और स्थानीय प्रक्रियाओं के बीच परस्पर क्रिया की अन्तर्दृष्टि भी हमें प्रदान करती है।

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com